आचार्य दुर्गदेव

जीवन-परिचय : श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा के साहित्य में दुर्गदेव नाम के तीन आचार्यों का उल्लेख मिलता है। प्रस्तुत दुर्गदेव दिगम्बर परम्परा के आचार्य हैं। इनके गुरु का नाम संयमदेव था। संयमदेव भी संयमसेन के शिष्य थे तथा संयमसेन के गुरु का नाम माधवचन्द्र था। दुर्गदेव विशुद्ध चारित्रवाले, ज्ञानरूपी जल से प्रक्षालित बुद्धिवाले, वाद-विवाद में देश भर के विद्वानों को पराजित करनेवाले, एवं सम्पूर्ण शास्त्रों के विद्वान थे।

दुर्गदेवाचार्य की रचनाओं के आधार पर ज्ञात होता है कि वे ई. सन् की 11वीं शती के विद्वान थे।

रचना-परिचय : दुर्गदेवाचार्य की निम्नलिखित रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. रिष्टसमुच्चय : 'रिष्टसमुच्चय' ग्रन्थ की रचना विक्रम संवत् 1089 श्रावण शुक्ल एकादशी शुक्रवार को लक्ष्मीनिवास राजा के राज्य में कुम्भनगर के शान्तिनाथ जिनालय में की गयी थी। इसमें 261 गाथाएँ हैं। इसमें मनुष्य की मृत्यु के समय का वर्णन किया गया है। अर्थात् इससे हम किस व्यक्ति की आयु कितने दिन, माह, वर्ष शेष हैं—यह संकेतों के आधार पर जान सकते हैं।

2. मरणकंडिका : इस ग्रन्थ में 146 गाथाएँ हैं, जो रिष्टसमुच्चय ग्रन्थ की गाथाओं से मिलती है। इस ग्रन्थ का विषय भी 'रिष्टसमुच्चय' ग्रन्थ के समान ही है।

3. अर्घकांड : इस ग्रन्थ में 149 गाथाएँ और दस अध्याय हैं। इसकी रचना भी शौरसेनी प्राकृत में हुई है। यह व्यापारादि में तेजी-मन्दी ज्ञात करने का अपूर्व ग्रन्थ है। धन, धान्य, सुकाल एवं दुष्काल, वृष्टि, अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि आदि जानने में सहायक ग्रन्थ है। ग्रन्थ छोटा होने पर भी उपयोगी है।

4. मन्त्रमहोदधि : दुर्गदेवाचार्य मन्त्रशास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। उनका यह ग्रन्थ मन्त्रशास्त्र सम्बन्धी ही है। इसकी भाषा भी प्राकृत है।